पिताजी

घर की हैं मुस्कान पिताजी ।
मेरे हैं भगवान पिताजी ।।

माता मेरी धरती जैसी,
लगते गगन समान पिताजी ।

माता घर की नींव सरीखी,
सिर पर छत सोपान पिताजी ।

माँ है गीता रामायण- सी,
बातों से विज्ञान पिताजी ।

रात - दिना वे महनत करते,
हैं मजदूर किसान पिताजी ।

आफत आयी तूफानों- सी,
बने रहे चट्टान पिताजी ।

अनुशासन में रखते सबको,
घर के हैं कप्तान पिताजी ।

मीठी बातें मिश्री जैसी,
सचमुच हैं रसखान पिताजी ।

सत्य, अहिंसा, समता वादी,
जन प्रेमी रहमान पिताजी ।

बच्चों के हित अपनी इच्छा,
करते हैं कुर्बान पिताजी ।

बिना इजाजत, कौन गया घर ?
वृद्ध बने दरबान पिताजी ।

शिव कुमार दीपक